eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 07, July 2024

जाति व्यवस्थाः गांधी एवं अंबेडकर एक विश्लेषण

आरती सोलंकी[1] , प्रोफेसर विन्नी जैन[2]
[1]शोधार्थी
[2]विभागाध्यक्ष, कलासंकाय, राजनीति विज्ञान विभाग, सेंट जॉन्स कॉलेज ,आगरा ,उत्तर प्रदेश उ0प्र0

Received: 15 July 2024 Accepted & Reviewed: 25 July 2024, Published : 31 July 2024

Abstract

परंपरागत भारतीय समाज में जाति को एक इकाई एवं व्यवस्था के रूप में प्रेषित किया गया है जाति व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका सामाजिक आर्थिक संरचना के नियोजन से भी रहे हैं। अपने उद्भव के समय से जाति व्यवस्था सामाजिक सामंजस्य कर्तव्य एवं सहयोग के मानदंडों तथा व्यावसायिक वर्गीकरण पर आधारित थी विकास के साथ–साथ भारत में राजनीतिक सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों में दशाओं में परिवर्तन हुआ अतः जाति व्यवस्था भी परिवर्तित होती गई।

शब्द संक्षेप– परंपरागत भारतीय समाज, जाति व्यवस्था, गांधी, अंबेडकर

Introduction

भारत में वेद पुराणों में 4 वर्ण व्यवस्थाओं का उल्लेख है। समय के साथ आगे बढ़ते हुए यह व्यवस्था कार्य आधारित हो जाती है।

- ब्राह्मण अध्ययन , वेद, यज्ञ अनुष्ठान कार्यों से संबंधित रहे हैं ।
- क्षत्रिय सुरक्षा के कार्यों से संबंधित रहे हैं।
- वैश्य उत्पादक के कार्यों से संबंधित माने गए हैं।
- शूद्रों को सेवा के कार्यों से संबंधित माना गया है।

प्रारंभिक काल में जाति व्यवस्था श्रम विभाजन के आधार पर थी परंतु बाद में विभाजन के स्वरूप में परिवर्तित हो गई। भारतीय सामाजिक संस्था में जाति व्यवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज के इतिहास की बात की जाए तो 5000 वर्षों से भी अधिक है जिस में जाति प्रथा भारतीय जनमानस की मुख्यधारा से जुड़ कर जीवंत रही है। भारतवर्ष में लगभग 3000 जातियां और उपजातियां पाई जाती हैं। विभिन्न विचारकों के अनुसार यदि हम भारतीय संस्कृति और तत्वों को समझना चाहते हैं तो जाति व्यवस्था का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। जाति व्यवस्था के महत्व के कारण समय समय पर अनेक इतिहास में, मनोवैज्ञानिकों, समाज शास्त्रियों, विदेशी विद्वानों व जनगणना आयुक्त ने भी जाति प्रथा की संरचना और उनके परिवर्तनों पर व्यापक अध्ययन किया है। भारत के अंदर संपूर्ण सामाजिक आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था को जाति प्रथा प्रभावित करती है। सामान्य जाति व्यवस्था को एक ऐसे समुदाय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें परस्पर अधिकारों, खानपान, कर्तव्य, जन्म से व्यवसाय का निर्धारण, पद, सामाजिक बौद्धिक स्थिति एक दूसरे से सामाजिक मेलजोल, सामाजिक दूरी एवं रिक्तता संबंधी अवधारणाएं व्याप्त है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 07, July 2024

जाति संबंधित गांधी एवं अंबेडकर के विचार–

भारतीय संविधान के रचयिता डॉ. भीमराव आम्बेडकर का सपना था कि भारत जाति–मुक्त हो, औद्योगिक राष्ट्र बने, सदैव लोकतांत्रिक बना रहे। लोग आम्बेडकर को एक दलित नेता के रूप में जानते हैं। जबकि उन्होंने बचपन से ही जाति प्रथा का खुलकर विरोध किया था। उन्होंने जातिवाद से मुक्त आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ भारत का सपना देखा था। मगर देश की राजनीति ने उन्हें सर्वसमाज के नेता के बजाय दलित समाज के नेता के रूप में स्थापित कर दिया है। डॉ.आम्बेडकर का एक और सपना था कि दलित धनवान बनें। वे हमेशा नौकरी मांगने वाले ही न बने रहें अपितु नौकरी देने वाले भी बनें। डॉ. भीमराव आम्बेडकर का मानना था कि वर्गहीन समाज गढ़ने से पहले समाज को जाति विहीन करना होगा। आज महिलाओं को अधिकार दिलाने के लिए हमारे पास जो भी संवैधानिक सुरक्षाकवच, कानूनी प्रावधान और संस्थागत उपाय मौजूद हैं, इसका श्रेय डॉ. भीमराव अम्बेडकर को जाता है। भारतीय संदर्भ में जब भी समाज में व्याप्त जाति, वर्ग और लिंग के स्तर पर असमानताओं और उनमें सुधार के मुद्दों पर चिंतन हो डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों और दृष्टिकोण को शामिल करना अति आवश्यक है।

अंबेडकर जाति व्यवस्था की आलोचनात्मक जांच करते हैं, श्रम विभाजन के आधार पर इसके बचाव के खिलाफ तर्क देते हैं। उनका तर्क है कि जाति केवल श्रम का विभाजन नहीं है, बल्कि मजदूरों का विभाजन है, जिसके कारण जबरन काम करना, नौकरी से दूर रहना और अकुशलता होती है। अंबेडकर अंतरजातीय विवाह और वेदों और पुराणों सहित धार्मिक ग्रंथों का विनाश। जाति व्यवस्था को खत्म करने के लिए दो प्राथमिक समाधान प्रस्तुत करते हैं।

महात्मा गांधी के शांतिवाद पर चर्चा अक्सर जाति और लिंग धर्म व अहिंसा के आधार पर की जाती है। जबकि एक नज़र में देखा जाए तो गांधी एक गैर–संघर्षशील व्यक्ति प्रतीत होते हैं शांति कायम करने की बात तो करते हैं लेकिन उसके लिए कोई व्यवस्थित प्रयास नहीं करते। उनके अपने कई लेखों के बाद, जो उनकी उदारता पर विवाद किया जाता है। लोगों के द्वारा अक्सर ये प्रश्न किया जाता है कि गांधी जी के द्वारा जाति को लेकर क्या कार्य किए गए तथा किस प्रकार लोगों के सामाजिक जीवन के उत्थान में उन्होंने योगदान दिया। उनके लेखन और जाति, लिंग और धर्म की उनकी अपनी अवधारणा के बारे में अस्पष्टता के कारण श्महात्माश के रूप में उन्हें चुनौती दी गई है। गांधी ने निचली जाति के उत्थान के लिए अस्पृश्यता की निंदा की, लेकिन उन्होंने अपने जीवन के अधिकांश समय में वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की। इसलिए भले ही उन्होंने अछूतों के लिए सम्मान की बात कही लेकिन उन्होंने जाति व्यवस्था का समर्थन भी किया।

महात्मा गांधी को आदर्श माना जाता है। लेकिन महिलाओं के संदर्भ में उनकी प्रतिगामी और पितृसत्तात्मक स्थिति को नकारा नहीं जा सकता।

कांचा इलैया शेफर्ड ने अपने "लेख गांधी जाति उन्मूलनवादी नहीं थे" में लिखा– गाँधी जाति उन्मूलनवादी नहीं थे। वे अस्पृश्यता के उन्मूलनवादी थे। गाँधी जाति और वर्ण व्यवस्था के उन्मूलन के खिलाफ थे क्योंकि वे जानते थे कि जाति/वर्ण व्यवस्था हिंदू धर्म की आत्मा है। महात्मा गांधी और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के विचारों में मतभेद सदैव बने रहे स्वतंत्रता से पहले भी और स्वतंत्रता के बाद भी कारण गांधी जी अस्पृश्यता समाप्ति की बात करते थे और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जाति व्यवस्था समाप्ति की बात करते रहे। भारत की जाति व्यवस्था से डॉक्टर भीमराव अंबेडकर इस कदर आहत थे कि उन्होंने वर्ष 1935 में कहा था "मैं हिंदू धर्म में जन्मा जरूर हूं लेकिन मैं हिंदू धर्म में मरूंगा नहीं।" डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 07, July 2024

भेदभाव से आहत होकर जाति व्यवस्था के नाम पर हो रहे शोषण को देखते हुए बौद्ध धर्म को अपना लिया। डॉक्टर अंबेडकर द्वारा हर धर्म के बारे में गहन अध्ययन किया गया था उसके बाद उन्हें बौद्ध धर्म में जाति व्यवस्था कहीं भी दिखाई नहीं दी और उन्होंने इस धर्म को सम्मान देते हुए इसका अनुसरण करने का निश्चय कर लिया। राजनीतिक समानता' आर्थिक समानता तथा महिलाओं को आगे बढ़ाना महिलाओं के उत्थान के लिए उन्होंने बहुत सारे कार्य किए साथ ही उनका एक वक्तव्य है" मैं किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं ने जो प्रगति हासिल की है उसी से मापता हूं।"

भारतीय समाज जाति व्यवस्था के आधार पर ही बना हुआ है। प्रत्येक सामाजिक इकाई का निर्धारण जाति व्यवस्था से ही होता है। भारतीय समाज के आर्थिक गतिविधियां भी बहुत हद तक जातिगत व्यवसाय पर आधारित है किस व्यक्ति को किस कार्य को करना है यहां की जाति व्यवस्था से निर्धारित होता है। इसके अलावा धर्म व जाति के आधार पर ही व्यक्तिगत संस्कृति व संस्कार होते हैं। इन्हीं पूर्व धारणाओं का लोग आज भी पालन करते हैं।

गांधी एवं अंबेडकर के विचारों का विश्लेषण कार्य के आधार पर–

जाति व्यवस्था एक ऐतिहासिक व्यवस्था है और यह कई रूपों में विद्यमान रही है। ऐतिहासिक रूप से इसे "वर्ण व्यवस्था" के नाम से जाना जाता था और यह सामाजिक जीवन को चार वर्णों में संगठित करने पर आधारित थी। जाति व्यवस्था के आधार पर निचले कहे जाने वाले लोगों को दलित या अनुसूचित जाति का कहकर संबोधित किया जाता है।

महात्मा गांधी और डॉ. बीआर अंबेडकर दोनों ने अस्पृश्यता के खिलाफ प्रदर्शन आयोजित किया साथ निचली जातियों के उत्थान के लिए काम किया, अस्पृश्यता एवं अन्य जातिगत प्रतिबंधों के उन्मूलन की भी बात की और उच्च जातियों को भी अस्वस्थ किया कि उनके हसन का भी ध्यान रखा जाएगा।

महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता के सिद्धांत को असहनीय बताते हुए उसे समाप्त करने पर अत्यधिक बल दिया। महात्मा गांधी ने वर्ष 1932 से दलित कहे जाने वाले लोगों के उत्थान के लिए कार्य किया। महात्मा गांधी जी के द्वारा दलितों को हरिजन या भगवान संतान कहकर संबोधित किया जाने लगा। इसके बाद इन्होंने अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ की स्थापना की। महात्मा गांधी ने 1933 में 21 दिन का उपवास किया और हरिजन आंदोलन की सहायता के लिए अभियान चलाए। उन्होंने दलितों को मंदिर में प्रवेश करने तक के लिए आंदोलन चलाए। उन्होंने जातियों के बीच अंतर–विवाह को प्रोत्साहित किया। महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता निवारण के लिए देशभर पदयात्रा की थी। गांधीजी ने अपने पत्रों के नाम भी हरिजन, हरिजनबंधु और श्हरिजनसेवकश राखे थे। अंत समय तक अनेक कार्यों के बीच गाँधी हरिजनों के लिए फंड एकत्रित करते रहे जिससे उनकी सहायता की जा सके। गांधी जी का मानना था कि अगर कोई यह सिद्ध कर दे वेदों में अस्पृश्यता को स्थान दिया गया है तो वह वेदों का अनुसरण छोड़ देंगे। गांधीजी के लोक शिक्षण का ही प्रभाव था भारत की स्वतंत्रता के बाद अस्पृश्यता निवारण कानून भारत में बन गया। कहीं ना कहीं आज भी गांधी जी के नैतिक विचारों का अनुसरण किया जाता है।

डॉ भीमराव अंबेडकर के द्वारा धार्मिक राजनीतिक शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक औद्योगिक एवं मानवाधिकार संबंधित कार्य किए गए हैं जैसे अनुसूचित जाति या दलित कहे जाने वाले लोगों के लिए छुआछूत वाली सामाजिक व्यवस्था का विरोध करना उसके लिए आंदोलन करना शोषण को समाप्त करने के प्रयास तथा कुरीतियों को मिटाने के लिए कार्य किए। उनके द्वारा 1927 में मनुस्मृति दहन 1928 में महाद सत्याग्रह 1930 में नासिक सत्याग्रह जैसे आंदोलन चलाए गए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 07, July 2024

डॉ भीमराव अंबेडकर जी के द्वारा आर्थिक एवं वित्तीय योगदान दिए गए हैं। भारत में रिजर्व बैंक ऑफ़ इंडिया की स्थापना डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की रचना रुपए की समस्या उसका उद्भव और प्रभाव व यंग हिल्टन कमीशन के द्वारा 1935 में हुई।

भारतीय संविधान के निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के द्वारा के भारत के संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को समता सामानता बंधुता व मानवता के अधिकार दिए गए हैं। भारतीय संविधान को तैयार करने का कार्य कियाद्य महिला सशक्तिकरण हेतु भी उनके विचार अग्रसर रहे के द्वारा संसद में बतौर कानून मंत्री हिन्दू संहिता विधेयक पारित करवाने में प्रयास किया। विधायक पारित नहीं होने पर उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

भारत के संविधान के अंतर्गत समता सामानता व बंधुता के जो विचार दिए गए हैं। वह आज भी पथ प्रदर्शन के रूप में कार्य कर रहे हैं।